माहेश्वर तिवारी

मुड़ गए जो	टूटे खपरैल सी
मुड़ गए जो रास्ते चुपचाप जंगल की तरफ, ले गए वे एक जीवित भीड़ दलदल की तरफ। आहटें होने लगीं सब चीख में तब्दील, हैं टंगी सारे घरों में दर्द की कन्दील, मुड़ गया इतिहास फिर बीते हुए कल की तरफ। हैं खड़े कुछ लोग इस अंधे कुएं के पास, रोज जिससे है निकलती एक फूली लाश, फेंक देते हैं उठाकर जिसे हलचल की तरफ।	गर्दन पर, कुहनी पर जमी हुई मैल सी। मन की सारी यादें टूटे खपरैल सी। आलों पर जमे हुए मकड़ी के जाले, ढिबरी से निकले धब्बे काले–काले, उखड़ी–उखड़ी सांसे हैं बूढे बैल सी। हम हुए अंधेरों से भरी हुई खानें, कोयल का दर्द यह पहाड़ी क्या जाने, रातें सभी हैं ठेकेदार की रखैल सी।
	सम्पर्क– 'हरसिंगार' 48, नवीन नगर, मुरादाबाद–244001